करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है, न सुख को और न परमगति को ही प्राप्त होता है।।२३।।

तात्पर्य

कहा जा चुका है कि मानवसमाज की सभी वर्ण-जातियों के लिए शास्त्र-विधि है; मनुष्यमात्र को इन विधानों का अनुसरण करना चाहिए। जो पुरुष इन्हें न मानकर काम, क्रोध, और लोभ से प्रेरित होकर स्वेच्छाचार करता है, वह जीवन की सिद्धि को कभी प्राप्त नहीं हो सकता। भाव यह है कि जो मनुष्य इस तत्त्व को जानता है, परन्तु इसके अनुसार जीवन में आचरण नहीं करता, उसें नराधम समझना चाहिए। मनुष्ययोनि में जीव से यह अपेक्षा है कि वह बुद्धिमानी के साथ उन विधानों का पालन करेगा, जो जीवन की परमगति की प्राप्ति के लिए हैं। परन्तु यदि वह शास्त्र-विधि को नहीं मानता तो अपनी आत्मा को अधःपतन को पहुँचाता है। इतना ही नहीं, शास्त्र के विधान का और सामान्य धर्म का पालन करने पर भी यदि अन्त में वह श्रीभगवान् को जानने के स्तर तक नहीं पहुँचता, तो उसका सारा ज्ञान व्यर्थ है। अतएव यह आवश्यक है कि शनैः शनैः कृष्णभावना और भक्तियोग के स्तर पर अपने को उठा ले। तभी परमसिद्धि हो सकती है, अन्यथा नहीं।

कामकारतः शब्द का विशेष महत्त्व है। जो मनुष्य जानबूझ कर शास्त्र की अवज्ञा करता है, उसकी क्रिया निश्चित रूप से काम द्वारा प्रेरित है। वह जानता है कि यह निषिद्ध कर्म है, फिर भी कर बैठता है। इसी का नाम स्वेच्छाचार है। यह जानते हुए भी कि अमुक कर्तव्यकर्म करना है, उसे नहीं करता; इसलिए भी स्वेच्छाचारी है। ऐसे मनुष्यों का श्रीभगवान् के हाथों दण्डित होना निश्चित है। वे मानवजीवन की संसिद्धि को प्राप्त नहीं होते। मानवजीवन विशेष रूप से अपने सत्त्व की शुद्धि करने के लिए है। जो शास्त्रविधि का पालन नहीं करता, वह न तो अपनी शुद्धि कर सकता है और न ही कभी सच्चे सुख की अवस्था को प्राप्त हो सकता है।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।।२४।।

तस्मात्=इसलिए; **शास्त्रम्**=शास्त्र (ही); **प्रमाणम्**=प्रमाण है; **ते**=तेरे लिए; **कार्य**=कर्तव्य; **अकार्य**=निषेध के; **व्यवस्थितौ**=निर्णय में; **ज्ञात्वा**=जानकर; **शास्त्र**=शास्त्रों के; **विधान**=विधान में; **उक्तम्**=कहे गए; **कर्म**=कर्म को; **कर्तुम्**=करने के; **इह अर्हसि**=योग्य है।

अनुवाद

इसलिए कर्तव्य-अकर्तव्य के निर्णय में तेरे लिए शास्त्र ही प्रमाण है। इस प्रकार शास्त्र-विधि को जानकर कर्म करना चाहिए, जिससे शनैः-शनैः मुक्ति हो जाय।।२४।।

तात्पर्य

पन्द्रहवें अध्याय में कहा जा चुका है कि वेदों के सम्पूर्ण विधि-विधान का